Date – 6 August 2022

केरल में बाढ़

- केरल एक बार फिर बाढ़ जैसी स्थिति का सामना कर रहा है, जैसा कि वर्ष 2018 में तेज मानसून हवाओं के कारण उच्च तीव्रता की वर्षा के साथ देखा गया था।
- इसके अलावा, 2-3 दिनों के भीतर बंगाल की खाड़ी के ऊपर एक कम दबाव का क्षेत्र बनने की संभावना है, जिससे बारिश बढ़ने की संभावना है।

वर्ष 2018 में केरल में बाढ़:

- केरल में 1924 के बाद से सबसे भीषण बाढ़ अगस्त 2018 में मूसलाधार बारिश के बाद आई।
- बांधों के किनारे पानी भर जाने और अन्य जगहों पर भी पानी जमा होने के कारण बांध के गेट खोलने पड़े.

- बाढ़ वाले क्षेत्रों में पानी छोड़ने के लिए 50 प्रमुख बांधों में से कम से कम 35 को पहले ही खोल दिया गया है।
- समय के साथ, गाद ने बांधों और आसपास की नदियों की जल धारण क्षमता को काफी कम कर दिया था, जिससे तटबंधों और नदियों में बाढ़ का पानी आ गया था।
- तलछट जिसने बांध के निर्मित क्षेत्र को कम कर दिया (इसकी धारण क्षमता को कम करना), रेत खनन और बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई और पश्चिमी घाट में वन निकासी ने भी बाढ़ में एक प्रमुख कारक भूमिका निभाई।

बाढ़:

- यह आमतौर पर सूखी भूमि पर पानी का अतिप्रवाह होता है। भारी बारिश, तट के किनारे बड़ी मात्रा में पानी की उपस्थिति, बर्फ के तेजी से पिघलने और बांधों के टूटने आदि के कारण बाढ़ आ सकती है।
- बाढ़ यानि कुछ इंच पानी का बहाव या घरों की छतों तक पानी पहुंचना हानिकारक प्रभाव डाल सकता है।
- बाढ़ कम समय या लंबी अवधि में आ सकती है और दिनों, हफ्तों या उससे अधिक समय तक रह सकती है। मौसम संबंधी सभी प्राकृतिक आपदाओं में बाढ़ सबसे आम और व्यापक है।
- फ्लैश फ्लड सबसे खतरनाक प्रकार की बाढ़ है, क्योंकि यह बाढ़ को विनाशकारी रूप दे सकती है।

शहरी क्षेत्रों में लगातार बाढ़ के प्रमुख कारण:

अनियोजित विकास:

- अनियोजित विकास, तटीय क्षेत्रों में अतिक्रमण, बाढ़ नियंत्रण संरचनाओं की विफलता, अनियोजित जलाशय संचालन, खराब जल निकासी बुनियादी ढांचे, वनों की कटाई, भूमि उपयोग में परिवर्तन और नदी तल में अवसादन के कारण बाढ़ की घटनाएं होती हैं।
- भारी बारिश के दौरान नदी तटबंधों को तोड़ देती है और किनारे और रेत की पेटियों के साथ रहने वाले समुदायों को नुकसान पहुंचाती है।

अनियोजित शहरीकरण:

- शहरों और कस्बों में बाढ़ एक आम घटना हो गई है।
- यह जलमार्गों और आर्द्रभूमियों के अंधाधुंध अतिक्रमण, नालियों की अपर्याप्त क्षमता और जल निकासी के बुनियादी ढांचे के रखरखाव की कमी के कारण है।
- खराब अपशिष्ट प्रबंधन नालियों, नहरों और झीलों की जल-वहन क्षमता को कम करता है।

आपदा पूर्व योजना की उपेक्षा :

- बाढ़ प्रबंधन के इतिहास से पता चलता है कि आपदा प्रबंधन का ध्यान मुख्य रूप से बाढ़ के बाद के मुआवजे और राहत पर रहा है।
- कई जलाशयों और पनबिजली संयंत्रों में बाढ़ के स्तर को मापने के लिए पर्याप्त गेजिंग स्टेशन नहीं हैं, जो बाढ़ पूर्वानुमान का एक प्रमुख घटक है।
- गाडगिल समिति की सिफारिशों की अनदेखी:
- वर्ष 2011 में, माधव गाडगिल समिति ने लगभग 1,30,000 वर्ग किमी के क्षेत्र को एक पर्यावरण-संवेदनशील क्षेत्र (गुजरात, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र और तमिलनाडु तक विस्तारित) के रूप में घोषित करने की सिफारिश की थी।
- हालांकि छह राज्यों में से कोई भी केरल की सिफारिशों से सहमत नहीं था, इन राज्यों ने खनन पर प्रस्तावित प्रतिबंध, निर्माण गतिविधियों पर प्रतिबंध और जलविद्युत परियोजनाओं पर प्रतिबंध पर विशेष रूप से आपत्ति जताई थी।
- इस लापरवाही का नतीजा अब बार-बार आने वाली बाढ़ और भूस्खलन के रूप में साफ दिखाई दे रहा है|

स्वदीप कुमार

उर्वरक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता

- उर्वरक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए, केंद्र सरकार भारतीय उर्वरक कंपनियों को आत्मनिर्भर भारत पहल के एक हिस्से के रूप में अपनी अंतिम मील आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने के लिए सिफारिशें और सहायता प्रदान कर रही है।

भारत में उर्वरक उद्योग की स्थिति:

उर्वरक का महत्व:

- कृषि और इससे जुड़े क्षेत्र भारत में आय का सबसे बड़ा स्रोत है, यह क्षेत्र देश के सकल घरेलू उत्पाद में 9% का योगदान देता है, जिसमें 54.6% जनसंख्या कृषि गतिविधियों में लगी हुई है।
- कृषि क्षेत्र काफी हद तक उर्वरक उद्योग पर निर्भर करता है, जो फसलों के उत्पादन के लिए आवश्यक सबसे महत्वपूर्ण कच्चे माल का निर्माण करता है।
- इसके अलावा, भारतीय उर्वरक उद्योग स्वस्थ फसलों के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह डि-अमोनियम फॉस्फेट (डीएपी), मोनोअमोनियम फॉस्फेट (एमएपी), नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटेशियम (एनपीके) और सिंगल सुपरफॉस्फेट जैसे फास्फोरस उर्वरकों का उत्पादन करता है (एसएसपी)।

मुद्दे:

- उर्वरक उद्योग काफी हद तक सामान्य कच्चे माल जैसे फॉस्फेट रॉक पर निर्भर करता है, जो मुख्य रूप से राजस्थान और मध्य प्रदेश से प्राप्त होता है। हालाँकि, भारत अपने फॉस्फेट का 90% अन्य देशों से आयात करता है।

भारत में उर्वरक निर्माण:

- भारतीय किसान उर्वरक सहकारी लिमिटेड (इफको) देश की राजधानी में मुख्यालय वाली एक बहु-राज्य सहकारी समिति, सबसे बड़ी उर्वरक निर्माता और विपणक है।
- नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड एक राज्य के स्वामित्व वाला निगम है जो देश में कुल यूरिया उत्पादन का लगभग 15% यूरिया का सबसे बड़ा उत्पादक है।

पहल:

- नीम लेपित यूरिया
- नई यूरिया नीति 2015
- पोषक तत्व आधारित सब्सिडी योजना

डि-अमोनियम फॉस्फेट:

- डीएपी यूरिया के बाद भारत में दूसरा सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला उर्वरक है।

- किसान आमतौर पर इस उर्वरक का उपयोग बुवाई से ठीक पहले या बुवाई की शुरुआत में करते हैं, क्योंकि इसमें फास्फोरस (पी) की उच्च मात्रा होती है जो जड़ के विकास में सहायता करता है।
- डीएपी में 46% फास्फोरस, 18% नाइट्रोजन होता है, जो किसानों के लिए फास्फोरस का पसंदीदा स्रोत है। यह यूरिया के समान है, उसका पसंदीदा नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक जिसमें 46% नाइट्रोजन होता है।

डीएपी निर्भरता को कम करने के लिए की गई पहल:

विदेशों में संयुक्त उद्यमों को प्रोत्साहित करना:

- इस दिशा में, भारत की अग्रणी फॉस्फेटिक उर्वरक कंपनी कोरोमंडल इंटरनेशनल लिमिटेड ने सेनेगल स्थित रॉक फॉस्फेट खनन कंपनी, बाओबाब माइनिंग एंड केमिकल्स कॉरपोरेशन (बीएमसीसी) में 45 प्रतिशत इक्विटी शेयर के अधिग्रहण को औपचारिक रूप दिया है।
- इसके अलावा सेनेगल में खनन किया जाएगा और भारत में डीएपी का उत्पादन किया जाएगा।
- भारत सरकार देश की उर्वरक जरूरतों को पूरा करने के लिए आपूर्ति सुरक्षा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए इस तरह के निवेश को सक्षम करने के लिए उद्योग के साथ साझेदारी कर रही है।

संभावित पोटेशियम अयस्क संसाधनों का घरेलू अन्वेषण:

- खान और भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग ने राजस्थान के सतपुड़ा, भरूसारी और लखासर में संभावित पोटाश अयस्क संसाधनों की खोज में तेजी लाने की योजना बनाई है, जिसमें अन्य राज्यों के अलावा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक शामिल हैं।

स्वदीप कुमार